जन्माष्टमी पर "राशि अनुसार" करें श्रीकृष्ण आराधना

भगवान विष्णु देवकी के गर्भ से भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रात्रि 12:00 बजे भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था। इस दिन को इसीलिए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है।

यदुनंदन, कृष्ण, माधव, गोपाल, मुरलीवाला, गोवर्धनधारी, नंदलाल, बृजकिशोर, माखनचोर, केशव, देवकीनंदन, मुरलीमनोहर ऐसे नाना प्रकार के नामों से पुकारे जाने वाले राधाप्रिय-कृष्ण की जन्माष्टमी पर भक्ति करने से कई जन्मों के पाप उतर जाते है एवं मनुष्य विष्णु लोक को जाता है। इस दिन की गई भक्ति अश्वमेघ-यज्ञ के समान होती है। कलयुग में तप से ज्यादा महत्व भक्ति का है। प्रभु के नाम मात्र से मनुष्य इस जन्म का उद्धार कर सकता है।

जन्माष्टमी के दिन अपनी राशि अनुसार जपे मंत्र -

1. मेष– मेष राशि वाले जातक कृष्ण-जन्माष्टमी के दिन कृष्ण के इस मंत्र का जप करें- "ऊँ कमलनाथाय नमः।।"
2. वृषभ– वृषभ राशि वाले जातक इस दिन प्रभु की भक्ति में कृष्ण-अष्टक का पाठ करें।
3. मिथुन– मिथुन राशि वाले जातक इस दिन प्रभु को तुलसी चढ़ाएं एवं " ऊँ गोविन्दाय नमः" मंत्र का जाप करें।
4. कर्क– कर्क राशि वाले जातक इस दिन प्रभु को सफेद गुलाब चढाएं एवं राधाष्टक का पाठ करें।
5. सिंह– सिंह राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के "ऊँ कोटि-सूर्य-समप्रभाय नमः" का जाप करें।
6. कन्या– कन्या राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के बालरूप का स्मरण कर "ॐ देवकी-नंदनाय नमः" का जाप करें।
7. तुला– तुला राशि वाले जातक इस दिन प्रभु लीलाधर का स्मरण कर "ॐ लीला-धराय नमः" जाप करें।
8. वृश्चिक– वृश्चिक राशि वाले जातक इस दिन प्रभु वराह का स्मरण कर "ॐ वराह नमः" का जाप करें।
9. धनु– धनु राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के गुरु रूप का स्मरण कर "ॐ जगद्गुरुवे नमः" का जाप करें।
10. मकर– मकर राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के सुदर्शनधारी रूप का स्मरण कर "ॐ पूतना-जीविता हराय नमः" का जाप करें।
11. कुंभ– कुंभ राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के दया रूप का स्मरण कर "ॐ दयानिधाय नमः" का जाप करें।
12. मीन– मीन राशि वाले जातक इस दिन प्रभु के नटखट रूप का स्मरण कर "ॐ यशोदा-वत्सलाय नमः" का जाप करें।

इस प्रकार प्रभु के नाम का जाप अनन्य कोटि फल देगा एवं प्रभु हर मनोरथ को पूर्ण करेंगे।

कृष्ण को क्यों प्रिय है बांसुरी-माखन-मिश्री

भगवान श्रीकृष्ण को उनकी बांसुरी जो हमेशा उनके होंठों से लगी रहती है, दूसरी गाएं जिनके साथ सखा के समान व्यवहार है। इसी तरह कृष्णको माखन मिसरी, मोर पंख और कमल अति प्रिय है। कृष्ण का इनके प्रति प्रेम का उद्देश्य मनुष्य को जीवन के कई रहस्यों एवं ज्ञान से परिचय करना है।

बांसुरी से सीखें मीठा बोलना- बांसुरी श्रीकृष्ण को अतिप्रिय है, क्योंकि बांसुरी में तीन गुण है। पहला बांसुरी मे गांठ नहीं है। जो बताती है कि अपने अंदर किसी भी प्रकार की गांठ मत रखों। मन में बदले की भावना मत रखो। दूसरा बिना बजाये ये बजती नहीं है। अर्थात् जब तक ना कहा जाए तब तक मत बोलो और तीसरा जब भी बजती है मधुर ही बजती है। जिसका अर्थ हुआ जब भी बोलो, मीठा ही बोलो। जब ऐसे गुण किसी में भगवान देखते हैं, तो उसे उठाकर अपने होंठों से लगा लेते हैं।

कृष्णको प्यारी है गाय- श्रीकृष्ण को गौ अत्यंत प्रिय है। दरअसल, गौ सब कार्यों में उदार तथा समस्त गुणों की खान है। गौ का मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी, इन्हे पंचगव्य कहते हैं। मान्यता है कि इनका पान कर लेने से शरीर के भीतर पाप नहीं ठहरता। जो गौ की एक बार प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर अक्षय स्वर्ग का सुख भोगता है।

मोर से ब्रह्मचर्य की शिक्षा- मोर को चिर-ब्रह्मचर्य युक्त प्राणी समझा जाता है। अतः प्रेम में ब्रह्मचर्य की महान भावना को समाहित करने के प्रतीक रूप में कृष्णमोर पंख धारण करते हैं। मोर मुकुट का गहरा रंग दुःख और कठिनाइयों, हल्का रंग सुख-शांति और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

कमल की तरह रहें पवित्र- कमल कीचड़ में उगता है और उससे ही पोषण लेता है, लेकिन हमेशा कीचड़ से अलग ही रहता है। इसलिए कमल पवित्रता का प्रतीक है। इसकी सुंदरता और सुगंध सभी का मन मोहने वाली होती है। कमल यह संदेश देता है कि हमें कैसे जीना चाहिए? सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन किस प्रकार जिया जाए इसका सरल तरीका बताता है कमल।

मिसरी से सीखें घुल मिल जाना- कान्हा को माखन मिसरी बहुत ही प्रिय है। मिसरी का महत्वपूर्ण गुण यह है कि जब इसे माखन में मिलाया जाता है, तो उसकी मिठास माखन के कण-कण में घुल जाती है। मिसरी युक्त माखन जीवन और व्यवहार में प्रेम को अपनाने का संदेश देता है। यह बताता है कि प्रेम में किसी प्रकार से घुल मिल जाना चाहिए।